[redacted]

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 1
सृष्टि संवत् 1960853116
3 अप्रैल 2016
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

PRE-PAID BUSINESS CENTRE
1 MAR 2016

वर्ष–72, अंक : 1, 30 मार्च 3 अप्रैल 2016 तदनुसार 16 फाल्गुन सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आर्य समाज स्थापना दिवस

-ले० श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना करके संसार को एक नई दिशा देने का प्रयास किया था। आर्य समाज की स्थापना करने के पीछे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का उद्देश्य किसी मत, मजहब व सम्प्रदाय की स्थापना करना नहीं था अपितु विश्व के प्रत्येक मानव को सत्य का बोध कराना था। आर्य समाज का प्रादुर्भाव समाज में फैली अनेक कुरीतियों, पाखण्डों व अन्धविश्वासों के कारण हुआ था। आर्य समाज ने अपने आरम्भिक काल से लेकर आज तक समाज में फैली कुरीतियों के विरूद्ध आवाज उठाई है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में लिखते हैं कि मेरा किसी भी मत को चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है अपितु जो सत्य है उसको मानना और मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुडवाना मुझको अभीष्ट है। आर्य समाज की स्थापना सार्वभौम नियमों के आधार पर हुई है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के जो दस नियम बनाए हैं उनमें से पहले तीन नियमों को छोड़कर बाकी के सात नियमों पर किसी भी मत, मजहब और सम्प्रदाय को मानने वाला व्यक्ति आपत्ति नहीं उठा सकता। आर्य समाज स्थापना दिवस आर्य समाज की सफलताओं और विफलताओं की जांच पड़ताल करके अपनी त्रुटियों पर मनन करके उनको दूर करने और अपने आपको सर्वात्मना आर्य समाज की सेवा के लिए अर्पण करने का संकल्प लेने का दिवस है।

आर्य समाज ने देश और मानव समाज की धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक और राजनैतिक काया पलटने का सफल और स्तुत्य कार्य किया है। देश की आजादी में भाग लेने वाले नवयुवकों में से अधिकांश आर्य समाज की राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रभावित थे। स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है का उद्घोष देने वाले लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक लिखते हैं कि उन्हें स्वराज्य की प्रेरणा महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश से मिली है। इसी प्रकार लाला लाज पतराय, राम प्रसाद बिस्मिल, सरदार भगत सिंह, भाई परमानन्द आदि नौजवान आर्य समाज से प्रभावित थे। आर्य समाज ने समाज के ज्वलन्त मुद्दों जैसे सती प्रथा, विधवा विवाह, बाल विवाह, दहेज प्रथा आदि कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई और परिणामस्वरूप सरकार को इसके लिए कानून बनाने पड़े।

आर्य समाज वैदिक विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है। जिसमें व्यक्ति के सर्वतोमुखी उत्थान की योजनाएं विद्यमान हैं। चाहे वह वैयक्तिक हो वा सामाजिक, लौकिक हो वा पारलौकिक, राजनैतिक हो या आध्यात्मिक। इस विचारधारा ने एक नई विचारधारा को जन्म दिया जिसके फलस्वरूप धार्मिक मान्यताओं में बुद्धि का प्रवेश हुआ। सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियां और कुरीतियां नष्ट हुईं, मानसिक दासता के बन्धन ढीले हुए और लोग प्रत्येक क्षेत्र में सुधार की परिभाषा में सोचने और बोलने लगे।

आर्य समाज स्थापना दिवस का पर्व मुख्यत: आत्म निरीक्षण करने और आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने का व्रत लेने का भी आह्वान करता है। इस अवसर पर हमें अपने उन महापुरूषों, पूर्वजों का स्मरण करना चाहिए जिन्होंने अपने–आपको सर्वात्मना समर्पित करके आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाया।

8 अप्रैल को आर्य समाज स्थापना दिवस आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय गुरूदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में राज्य स्तर पर मनाया जा रहा है। आर्य समाज स्थापना दिवस मनाते हुए हम आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चलने का संकल्प लें। यह दिवस हमारे लिए आत्मबोध का अवसर है। इस अवसर पर हमें चिन्तन करना चाहिए कि वर्तमान में आर्य समाज के सामने जो चुनौतियां है उन चुनौतियों का सामना कैसे करें। आर्य समाज के सिद्धान्तों और मन्तव्यों का, वेद की शिक्षाओं का जन-जन में किस प्रकार प्रचार और प्रसार हो? इस पर विचार करते हुए अगर हम आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करेंगे तो आर्य समाज का लक्ष्य पूर्ण होगा।

नवसम्वत- नव वर्ष के शुभ अवसर पर

हार्दिक बधाई

नववर्ष–नवसम्वतसर 2073 चैत्र सुदी प्रतिपदा दिनांक 8 अप्रैल 2016 से आरम्भ हो रहा है। सृष्टि सम्वत् 1960853117 के शुभ अवसर पर तथा विक्रमी सम्वत् 2073 के शुभारम्भ पर हम आर्य मर्यादा के सभी पाठकों, आर्य समाजों व आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, प्रिंसीपलों, अध्यापकों, प्राध्यापकों तथा सभी आर्य बन्धुओं व आर्य बहनों को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से, आर्य विद्या परिषद पंजाब की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं भेंट करते हैं व हार्दिक बधाई देते हैं।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

सुदर्शन कुमार शर्मा — प्रधान
प्रेम भारद्वाज — महामंत्री
सुधीर कुमार शर्मा — कोषाध्यक्ष
अशोक परूथी एडवोकेट — रजिस्ट्रार

समस्त अधिकारी व अन्तरंग सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन,
चौक किशनपुरा जालन्धर

वैदिक राष्ट्र निर्माण के उपाय

-ले. स्वामी वेदानन्द सरस्वती, उत्तरकाशी

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।

तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निनां॥

यत्रेन्द्रश्च वायुश्च सम्यञ्चौ चरतः सह।

तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र सेदिर्न विद्यते॥

-यजु 20/25-26

अर्थात् वेद हमें एक ऐसे पवित्र राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा देता है जिस राष्ट्र की ब्रह्म शक्ति और क्षात्र शक्ति हाथ में हाथ मिला कर आगे बढ़ती है। जहां ज्ञानी पवित्र आत्माएं नित्य ज्ञानाग्नि का प्रकाश फैलाती हैं, जहां इन्द्र जैसा ऐश्वर्य और वायु जैसा पुरुषार्थ और परोपकार सर्वत्र देखने को मिलता हो, ऐसे समुन्नत राष्ट्र का चित्रण यजुर्वेद के इकत्तीसवें अध्याय में एक राष्ट्र पुरुष के रूप में किया गया है, जो इस प्रकार है :

ब्राह्मणोस्य मुखमासीत् बाहू राजन्य कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्य पद्भ्यां शूद्रोजायत्॥

-यजु० 31/11

अर्थात् जिस राष्ट्र में ज्ञानी पुरुषों का सर्वोपरि स्थान हो, क्षत्रिय लोग भुजाओं के समान राष्ट्र रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहें, वैश्य वर्ग राष्ट्र की समृद्धि में संलग्न रहे एवं अपने श्रम और सेवा से राष्ट्र हित में सामान्य जन समर्पित रहे ऐसा राष्ट्र एक आदर्श राष्ट्र कहलाता है। जिस राष्ट्र में अज्ञान, अन्याय, अभाव, आलस्य कहीं देखने को भी न मिलता हो, कहीं कोई चोर, धूर्त, भ्रष्टाचारी, असत्यवादी, अन्याय-कारी, भूखा, नंगा, धर्म भ्रष्ट न हो, वहाँ स्वर्ग का स्वप्न साकार हो उठता है। महर्षि व्यास जी महा-भारत में ऐसे राष्ट्र के लिए नमन करते हुए लिखते हैं :

ब्रह्म वक्त्रं भुजौ क्षत्रं कृत्सनं ऊरूदरं विशः।

पादौ यस्याश्रिता शूद्राः तस्मै वर्णात्मने नमः॥

अर्थात् जैसे ब्रह्मज्ञानी व्यक्ति की वाणी का हाथ, पैर, पेट आदि शरीर के सब अंग पालन करते हैं, वैसे ही जिस राष्ट्र में ज्ञानी पुरुषों द्वारा दी गई व्यवस्था का क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी जन श्रद्धा से पालन करते हैं, ऐसी वर्णात्मक व्यवस्था को हम प्रणाम करते हैं। आचार्य चाणक्य भी उद्घोषणा करते हुए लिखते हैं:

व्यवास्थितार्य मर्यादा कृत-वर्णा श्रमस्थितिः।

तया हि रक्षितो लोकः प्रसीदति न सीदति॥

अर्थात् आर्यों की वर्णाश्रम व्यवस्था चलती है तो उसी से राष्ट्र की रक्षा होती है। वहां सभी लोग सुखी रहते हैं, कहीं कोई दुःखी नहीं होता। वर्णाश्रम व्यवस्था जन्मना नहीं होती वह गुण कर्म स्वभाव के अनुसार होती है। जन्म के आधार पर ब्राह्मण आदि वर्णों का निर्धारण सारे दोषों का कारण है। इन्हीं जातियों के आधार पर आरक्षण करना धूर्त नेताओं का कर्म है। जो राष्ट्र को पतन के गर्त में ले जा रहा है। अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के रूप में समाज को बांटना भ्रष्ट नेताओं का ही कार्य है। जो फूट डालो और राज करो की नीति पर चल रहे हैं। शराब आदि मादक द्रव्यों के प्रचार से आम जनता को बेहोश बनाकर रखा हुआ है।

राष्ट्रद्रोही, वैदिक शिक्षा से अनभिज्ञ, आज के राजनेताओं के कृत्यों का जो परिणाम समाज में देखने में आ रहा है, उसके अनुसार हम कह सकते हैं :

न राज्य अस्ति, न राजा अस्ति, न दण्डोन च दाण्डिकः।

अधर्मेण एव प्रजा सर्वाः भक्षन्ति च परस्परम्॥

शिक्षकाः वंचका जाताः, रक्षकाः भक्षकाः तथा।

पोषकाः मोषकाः भूता, सेवका, अपि घर्षकाः॥

अर्थात् राष्ट्र में चोरी, डकैती, हत्याएं, आतंकवाद, दुराचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, बलात्कार, अन्याय, अत्याचार आदि पापों का इतना बोलबाला है कि लगता है न यहां कोई राजा है, न राज्य जैसी स्थिति है। दुष्टों को, यहां तक कि बम विस्फोट से हज़ारों की हत्याएं करने वाले आतंकवादियों को भी कोई दण्ड नहीं दिया जाता। अपितु उनकी अतिथियों की तरह सेवा की जाती है। यह अराजकता जैसी स्थिति नहीं तो और क्या है ? अधर्म से एक व्यक्ति दूसरे को लूट-लूट कर खा रहा है। कहीं न्याय नाम की चीज़ नहीं रह गई है। न्याय भी पैसे वाले लोग खरीद रहे है। शिक्षक वंचक बन गए, रक्षक भक्षक हो गए। पोषक लुटेरे हो गए तथा सेवक ठगों जैसा व्यवहार कर रहे हैं। यह सब धर्म निरपेक्ष सरकार की देन है। जो धर्म अपने रक्षकों की रक्षा करता है, अपने हत्यारों की हत्या करता है (धर्मेव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः) ऐसे धर्म को ही देश निकाला दे देना ही धर्म निरपेक्षता का आधार माना जा रहा है।

वैदिक धर्म व्यक्ति को एक मर्यादित जीवन जीने को प्रेरित करता है। धर्म निरपेक्ष नेताओं को मर्यादित जीवन जीना अच्छा नहीं लगता। वे स्वच्छन्द रहकर भ्रष्टाचारी, दुराचारी, व्यभिचारी, बलात्कारी जीवन जीना चाहते हैं। शराब, मांस, मछली, अण्डे आदि खाद्य पदार्थ उनको प्रिय हैं। इसलिए इन सब चीज़ों का वे प्रचार प्रसार करने में लगे हुए हैं। वेदों की शिक्षा उनके रास्ते का रोड़ा न बने अतः गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के स्थान पर लार्ड मैकाले की शिक्षा के प्रचार में जी जान से लगे हैं। राष्ट्र पतन का मूल कारण है वैदिक ज्ञान का ह्रास।

अनाभ्यासे वेदानां मृत्युः विप्रान् जिघांसति।

आचारविहीन राष्ट्रस्य घोरं नरके पतिष्यति॥

ब्राह्मण का धर्म है वेद का पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञादि सत्कर्मों का करना कराना, सत्य विद्या का प्रकाश करना। त्याग तपस्या और ईश्वरभक्ति पूर्ण जीवन जीना। जब ब्राह्मण अपने धर्म से पतित हो जाता है, तो सारा राष्ट्र आचारभ्रष्ट होकर घोर नरक में डूब जाता है। अतः राष्ट्र के उत्थान का उपाय है वेदों की शिक्षा का प्रचार-प्रसार हो। इसके लिए कुछ त्यागी तपस्वी ब्राह्मणवृत्ति के लोगों को आगे आना होगा। जो इसी काम के लिए अपने जीवन की आहुति देने के लिए तैयार हों। ऋग्वेद के संगठन सूक्त में राष्ट्र के उत्थान की अनमोल शिक्षा दी गई है, उसे हम नीचे उद्धृत करते हैं :

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥

समानो मन्त्रः समिति समानि समानं मनः सहचित्तमेषाम्।

समानं मन्त्राभिमन्त्रये वः समानेन नो हविषा जुहोमि॥

समानि व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा नः सुसहासति॥

(ऋ० 10.191.2.3.4)

अर्थात् ईश्वर का सभी राष्ट्रभक्त बुद्धिजीवियों के लिए आदेश है कि तुम सब लोग मिलकर राष्ट्रहित में मजबूत संगठन बनाओ। साथ मिलकर सब पुरुषार्थ करो। साथ बैठकर आपस में राष्ट्र की चर्चा करो। आपस में विवाद न करो। एक दूसरे के विचारों को धैर्य पूर्वक सुनकर राष्ट्रहित में जो निर्णय लिये जाएं उसमें सब एकमत हों। क्योंकि व्यक्ति के हित से राष्ट्र का हित बड़ा होता है, इसलिए अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठो। राष्ट्र हित में मन और वाणी ही नहीं, यदि प्राण भी न्यौछावर करने पड़े तो पीछे मत रहो।

राष्ट्रहित में सब का एक ही विचार हो, राज आर्य सभा भी एकमत होकर कार्य करें। सब

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय.....

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों की सेवा में

आर्य समाज स्थापना दिवस और नव संवत्सर 8 अप्रैल 2016 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय गुरूदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाया जा रहा है। आज से 141 वर्ष पूर्व आज के दिन सन् 1875 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके एक नई क्रान्ति को जन्म दिया था। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना करके राष्ट्र को एक नई दिशा देने का प्रयास किया था। जो राष्ट्र अपने गौरवमय अतीत को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहा था, गुलामी के कारण अपने संस्कृति और सभ्यता के आदर्शों को भूल चुका था। ऐसी मानव जाति को एक सूत्र में पिरोने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा इस वर्ष आर्य समाज स्थापना दिवस पंजाब की सभी आर्य समाजों और शिक्षण संस्थाओं को एकत्रित करके मनाने का निश्चय किया है। आर्य समाज के समक्ष इस समय जो सबसे बड़ा कार्य है वह है वैदिक विचारधारा की रक्षा और उसका प्रचार-प्रसार करना। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिन उद्देश्यों और मन्तव्यों की स्थापना के लिए इस समाज की स्थापना की थी उन उद्देश्यों और मन्तव्यों का प्रचार-प्रसार करना आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। जिस प्रकार आर्य समाज ने आजादी से पूर्व राष्ट्र सेवा का कार्य किया है उसी प्रकार वर्तमान में भी समाज में फैल रही बुराईयों को दूर करने में आर्य समाज को अपना योगदान देना चाहिए। आर्य समाज ने देशवासियों को समष्टि रूप से सोचने का सर्वप्रथम पाठ पढाया है। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने सार्वजनिक सेवा और लोक कल्याण के क्षेत्र में विशिष्ट मर्यादाएं स्थापित की हैं। आर्य जनों ने सत्य रक्षा, सुधार कार्य और संगठन की दृढ़ता की दिशा में जो कार्य किया वह सराहनीय है। इसमें सन्देह नहीं कि आर्य समाज एक महान् आध्यात्मिक उफान है जो पौराणिक हिन्दु मत को वेदाभिमुख करके उसकी अनिश्चितता और त्रुटियों में क्रान्तिकारी सुधार लाकर उसे जीवन की पवित्रता, सादगी तथा स्वतन्त्र आर्य जीवन एवं विचारधारा की सर्वतोमुखी प्रेरणा के साथ जोड़ने वाला है। महर्षि दयानन्द ने एकेश्वरवाद और जीवन के प्रत्येक अंग के लिए सुनिश्चित आचार पद्धति एवं व्यवस्थित धार्मिक अनुष्ठान के साथ आध्यात्मिक त्यागवाद का प्रचार किया। आर्य समाज को बहुत पुराने और अत्यन्त सम्मानित अर्थात् वेदादि सत्शास्त्रों पर आधारित सुनिश्चित धर्म को प्रदान करने का श्रेय प्राप्त है।

वर्तमान में हमें राष्ट्र के समक्ष जो समस्याएं दिखाई दे रही है उन समस्याओं का समाधान किस प्रकार किया जाए इस पर चिन्तन और मनन करने की आवश्यकता है। राष्ट्र के अन्दर राष्ट्रविरोधी गतिविधियां हो रही हैं, कहीं पर मनुस्मृति की प्रतियां जलाई जा रही है, आतंकवादियों के समर्थन में नारे लगाए जा रहे हैं और देश का तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग उसे अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता कहकर उचित ठहरा रहा है। वर्तमान में देश के सामने जो परिस्थितियां है उन पर चिन्तन करना है। इस तथाकथित बौद्धिकवाद से छुटकारा पाकर के राष्ट्र को एक नई दिशा देने का प्रयास करना है। बौद्धिकवाद के नाम पर राष्ट्र के टुकड़े नहीं किए जा सकते। इस बौद्धिक प्रदूषण से मुक्ति पाने के लिए हमें वैदिक शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करना है। वेद की शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। वैदिक साहित्य के द्वारा हम लोगों में एक नई जागृति लाएं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा लोगों में नव चेतना लाने के उद्देश्य से वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर दिया जाता है ताकि लोग उसे पढ़कर लाभ उठा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों ने निवेदन है कि इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दें। 8 अप्रैल 2016 दिन शुक्रवार को सभी एकत्रित होकर इस कार्यक्रम को सफल बनाएं। आर्य समाज स्थापना दिवस के इस अवसर पर सभी आर्यजन संकल्प करें कि हमें आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करना है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य महर्षि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाना है। गत वर्ष में हमने वेद प्रचार के लिए क्या-क्या कार्य किए हैं उस पर चिन्तन करना है। आने वाले वर्ष के लिए वेद प्रचार की योजनाएं बनाएं और उन्हें क्रियान्वित करें। आम जनता में महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों एवं वेद की शिक्षाओं को प्रचारित करने का प्रयास करें। आर्य समाज स्थापना दिवस मनाना तब सार्थक होगा जब हम कोई नया संकल्प लेकर आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करेंगे।

आर्य समाज एक क्रान्ति का नाम है, एक ऐसी आग है जो कभी बुझनी नहीं चाहिए। इस आग को प्रज्जवलित रखने में जिन धर्मवीरों, महापुरूषों ने अपना बलिदान दिया है, उन महापुरूषों को याद करते हुए उनके पद्चिह्नों का अनुसरण करें। इस प्रकार अगर हम आर्य समाज स्थापना दिवस मनाएंगे तो अवश्य ही समाज के अन्दर एक नई चेतना आएगी और राष्ट्र को नई दिशा मिलेगी। मैं आशा करता हूं कि हम सभी इन विचारों पर चिन्तन करते हुए अपने-अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करेंगे और सर्वात्मना समर्पित होकर आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करेंगे।

-प्रेम भारद्वाज महामंत्री

आमंत्रण सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में 8 अप्रैल 2016 दिन शुक्रवार को आर्य समाज स्थापना दिवस राज्य स्तर पर बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है।

कार्यक्रम

हवन यज्ञ प्रात : 9.00 बजे **नाशता 10.00 बजे**

मुख्य कार्यक्रम 11 बजे से 2 बजे तक **ऋषि लंगर 2.00 बजे**

इस कार्यक्रम में आप सादर आमंत्रित हैं।

सुदर्शन शर्मा **प्रेम भारद्वाज**

सभा प्रधान **सभा महामंत्री**

'जन्म-मरण के दुःखों से मुक्ति के विवेक व वैराग्य आदि चार साधन'

-ले. मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य के जीवन का मुख्य उद्देश्य सभी प्रकार के दुःखों से मुक्ति व मोक्ष की प्राप्ति है। मुक्ति व मोक्ष एक प्रकार की जीवात्मा को पूर्ण स्वतन्त्रता है जिसमें शुभ व अशुभ कर्मों के फलों का भोग नहीं होता। यह स्वतन्त्रता वा मुक्ति हमें अपने मिथ्या व अशुभ कर्मों के फलों के भोग से चाहिये। जब भी कोई मनुष्य शुभ व अशुभ कर्म करता है तो उस कर्म की वासना का संस्कार उसके चित पर अंकित हो जाता है, प्रायः उसी प्रकार जिस प्रकार से आंखों के सामने चित्र आता है या कैमरे में चित्र अंकित होता है। इस कर्म का फल जब तक कर्म का कर्ता जीवात्मा वा मनुष्य भोग नहीं लेता, उसके जन्म व मृत्यु का क्रम चलता रहता है। यदि जन्म न हो अर्थात् जन्म-मरण का क्रम रूक जाये, तो इसके लिए हमें पूर्व जन्म-जन्मान्तरों में किए हुए सभी अशुभ कर्मों का फल भोग कर भविष्य में जन्म व मृत्यु के कारण शुभ व अशुभ कर्मों को बन्द करना होगा व परमार्थ के कर्म यथा ईश्वरोपासना, यज्ञ, दान, सत्संगति आदि कर्म ही करने होंगे। हम शुभ व अशुभ कर्म किसी इच्छा व लोभ के कारण ही करते हैं। इसके लिए हमें ज्ञान व विवेक की आवश्यकता है। विवेक से हमें यह ज्ञान हो जाता है कि अमुक कर्म का फल हमें क्या-क्या मिल सकता है। अतः हमें अपने कर्मों के फलों की आसक्ति को हटाना व दूर करना होगा व इसके साथ ही अशुभ कर्म जिससे दूसरे मनुष्य आदि प्राणियों का अपकार होता है, उन्हें भी पूर्णतः छोड़ना होगा। ऐसा होने पर ईश्वर का साक्षात्कार या तो मनुष्य वा योगी को हो जायेगा अन्यथा मनुष्य इस क्षेत्र में उतरोतर आगे बढ़ सकता है। मोक्ष कब मिलेगा यह तो मनुष्य की अपनी साधना व कर्मों के साथ ईश्वर की कृपा पर निर्भर है। हमारा व सभी विज्ञ मनुष्यों का उद्देश्य इस बात पर ही केन्द्रित होना चाहिये कि हम मोक्ष के अनुरुप साधना कर रहे हैं वा नहीं। यदि हमारी साधना, वेद व योगदर्शन के अनुसार होगी तो परिणाम भी उसके अनुरूप श्रेयस्कर ही होगा।

महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ-प्रकाश के नवम समुल्लास में एक प्रश्न प्रस्तुत किया है कि मुक्ति के क्या-क्या साधन हैं ? इसका उत्तर देते हुए वह कहते हैं कि मुक्ति के कुछ साधन वह सत्यार्थ-प्रकाश में लिखे चुके हैं। उन साधनों के अतिरिक्त मुक्ति चाहने वालों को विशेष साधन यह करना है कि वह जीवनमुक्त अर्थात् जिन मिथ्याभाषणादि पाप कर्मों का फल दुःख है, उन को छोड़ सुखरूप फल को देने वाले सत्यभाषणादि धर्माचरण अवश्य करे। यह जीवनमुक्त अवस्था है। जो मनुष्य दुःख से छूटना और सुख को पास करना चाहे वह अधर्म को छोड़कर धर्म के कार्य अवश्य करे क्योंकि दुःख का मूल कारण पापाचरण और सुख का धर्माचरण है। सत्यपुरुषों के संग से विवेक अर्थात् सत्यासत्य, धर्माधर्म व कर्त्तव्या-कर्तव्य का निश्चय अवश्य करें तथा इन्हें पृथक-पृथक जानें। शरीर में विद्यमान पंचकोशों का ज्ञान प्राप्त करे व इनका विवेचन करें। एक 'अन्नमय कोष' जो त्वचा से लेकर अस्थिपर्यन्त का समुदाय पृथिवीमय अर्थात् पृथिवी के पदार्थों से निर्मित है। दूसरा 'प्राणमय कोष' जिस में 'प्राण' अर्थात् जो भीतर से बाहर जाता, 'अपान' जो बाहर से भीतर जाता ? 'समान' जो नाभिस्थ होकर सर्वत्र शरीर में रस पहुंचाता, 'उदान' जिस से कण्ठस्थ अन्न पान (उदर में) खैंचा जाता और बल पराक्रम होता है, 'व्यान' जिस से सब शरीर में चेष्टा आदि कर्म जीव करता है। तीसरा 'मनोमय कोष' जिस में मन के साथ अहंकार, वाक्, पाद, पाणि, पायु और उपस्थ पांच कर्म-इन्द्रियां हैं। चौथा 'विज्ञानमय कोष' जिस में बुद्धि, चित्त, श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नासिका, ये पांच ज्ञान-इन्द्रियां जिन से जीव ज्ञानादि व्यवहार करता है। पांचवां 'आनन्दमय कोश' जिस में प्रीति प्रसन्नता, न्यून आनन्द, अधिक आनन्द, आनन्द और आधार कारण रूप प्रकृति है, ये पांच कोष कहलाते हैं। इन्हीं से जीव वा मनुष्य सब प्रकार के कर्म, उपासना और ज्ञानादि व्यवहारों को करता है। इन पंच कोषों के ज्ञान से सामान्य जन प्रायः अपरिचित हैं। इनके विस्तृत ज्ञान के लिए योगदर्शन आदि दर्शन ग्रन्थ व उन पर प्राचीन व अर्वाचीन आर्यविद्वानों की टीकायें पढ़कर पाठकों को लाभ उठाना मनुष्य शरीर की तीन अवस्थायें-एक 'जागृत' दूसरी 'स्वप्न' और तीसरी 'सुषुप्ति' अवस्था कहलाती है। तीन शरीर हैं-एक 'स्थूल' जो यह दीखता है। दूसरा पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच सूक्ष्म भूत और मन तथा बुद्धि इन सत्तरह तत्वों का समुदाय 'सूक्ष्म शरीर' कहलाता है। यह सूक्ष्म शरीर जन्ममरणादि में भी जीव के साथ रहता है। इस के दो भेद हैं--एक भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म भूतों के अंशों से बना है। दूसरा स्वाभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप है। यह दूसरा अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है। तीसरा शरीर जिस में सुषुप्ति अर्थात् गाढ़ निद्रा होती है, वह प्रकृति रूप होने से सर्वत्र विभु और सब जीवों के लिए एक वा एक समान है। चौथा तुरीय शरीर वह कहाता है जिस में समाधि को प्राप्त कर मनुष्य वा योगी परमात्मा के आनन्दस्वरूप में मग्न होते हैं। इसी समाधि संस्कारजन्य शुद्ध शरीर का पराक्रम वा प्रभाव मुक्ति में भी यथावत् सहायक रहता है। इन पंक्तियों में महर्षि दयानन्द जी ने बहुत गूढ़ ज्ञान प्रस्तुत किया है जिसे पाठकों को बार-बार पढ़ना व समझने का प्रयास करना चाहिये और यथासम्भव साधकों व योगियों से इसकी चर्चा करनी जीव वा जीवात्मा इन सब कोषों एवं अवस्थाओं से पृथक है। जब मनुष्य की मृत्यु होती है तब प्रायः सभी लोग कहते हैं कि जीव निकल गया। यही जीव सब का प्रेरक, सब का धर्ता, साक्षीकर्ता व भोक्ता कहलाता है। जो कोई ऐसा कहे कि जीव कर्ता व भोक्ता नहीं है तो जानों कि वह मनुष्य अज्ञानी व अविवेकी है। ऐसे लोगों की संगति करने से मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो सकती, ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है। जीव से इतर व पृथक जो यह सब जड़ वा भौतिक पदार्थ हैं, इन को सुख-दुख का भोग वा पाप-पुण्य कर्तव्य कभी नहीं हो सकता। हां, इन जड़ व भौतिक पदार्थों के सम्बन्ध से जीव पाप-पुण्यों का कर्ता और सुख-दुःखों का भोक्ता है। जब इन्द्रियां अर्थों अर्थात् विषयों में, मन इन्द्रियों में और आत्मा मन के साथ संयुक्त होकर प्राणों को प्रेरणा करके अच्छे या बुरे कर्मों में लगाता है तभी वह बहिर्मुख हो जाता है। उसी समय आत्मा के भीतर से आनन्द, उत्साह, निर्भयता और बुरे कर्मों को करने में भय, शंका व लज्जा उत्पन्न होती है। वह आनन्द, उत्साह, निर्भयता, भय, शंका व लज्जा आदि अन्तर्यामी परमात्मा की शिक्षा है। जो कोई इस शिक्षा के अनुकूल वर्तता है वही मुक्ति-जन्य सुखों को प्राप्त होता है और जो विपरीत वर्तता है वह जन्म-मरण के बन्ध-जन्य दुःख भोगता है।

महर्षि दयानन्द जी ने उपर्युक्त पंक्तियों में मुक्ति में सहायक विवेक अर्थात् यथार्थ ज्ञान को प्रस्तुत किया है। जन्म-मरण के दुःख से मुक्ति के अन्य उपायों में 'वैराग्य', 'षट्क सम्पति' तथा 'मुमुक्षुत्व' भी सम्मिलित है। सत्यार्थप्रकाश में इन पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है जिसके लिए इस ग्रन्थ का नौंवा समुल्लास पढ़ना आवश्यक है। हम आशा करते हैं कि इस समुल्लास को पढ़कर पाठक जीवन विषयक इस यथार्थ ज्ञान से परिचित होकर लाभ उठा सकते हैं और अपने जीवन को सही दिशा देकर अपनी दशा बदल सकते हैं। इससे न केवल मुक्ति के यथार्थ ज्ञान को जानकर लाभान्वित होंगे अपितु समाज, देश व विश्व भी इस ज्ञान

(शेष पृष्ठ 6 पर)

यज्ञ परिकल्पना एवं फल प्राप्ति

-ले. सुशील वर्मा, फाजिल्का

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे।
इन्द्रस्य युज्यः सखा॥
ऋग् 1/22/19

हे लोगों ! विष्णु (ब्रह्म) के कर्मों को देखो, जिन कर्मों को देखकर मनुष्य अपने व्रतों का पालन करने में सफल होता है। विष्णु इन्द्र (जीव) का सबसे योग्य सखा मित्र है।

''वेवेष्टि व्याप्नोति चरऽचरं जगत स विष्णु'' चर और अचर जगत में व्यापक होने से परमात्मा का नाम विष्णु है। इन्द्रनाम जीव का। उस विराट् पुरूष ब्रह्म ने अपने सखा पुरूष (जीव) के शरीर की रचना में अपने ही विराट स्वरूप शरीर (ब्रह्माण्ड) की रचना का पूर्णरूपेण अनुकरण किया है। कहने का तात्पर्य यह है कि मानव शरीर इस ब्रह्माण्ड की एक लघु प्रतिकृति है। इन दोनों के प्रतिनिधि रूप में ऋषियों ने यज्ञों की परिकल्पना की। जिस प्रकार भूमण्डल और नक्षत्रमण्डल का ज्ञान कराने हेतु मानचित्र आदि बनाए जाते हैं, उसी प्रकार ब्रह्माण्ड और पिण्ड (शरीर) की रचना का ज्ञान कराने के लिए यज्ञों की कल्पना की। ब्रह्माण्ड और पिण्ड की स्थूल सूक्ष्म रचना का ज्ञान करवाने हेतु अग्निहोत्र, दर्शपौर्णमास और चातुर्मास्य आदि यज्ञों की कल्पना की। यही कारण है कि यज्ञों का एक नाम ''कल्प'' भी है-''कल्पनात् कल्पः'' और यज्ञों के व्याख्यान करने वाले सूत्र ग्रन्थों का नाम ''कल्पसूत्र'' है। ''यद् ब्रह्माण्डे तद पिण्डे'' यही है ब्रह्माण्ड और शरीर की समानता और यज्ञ कल्पना का आधार। छान्दग्योपनिषद में तो आधिदैवत यज्ञ का बहुत ही सुंदर वर्णन है

पृथिवी अग्नि है, सम्वत्सर समिधा, आकाश धुँआ, रात्रि ज्वाला, दिशाएँ अँगारे, अवान्तर दिशाएँ चिन्गारियाँ। पृथ्वी पर अग्नि में वर्षा जल की आहुति पड़ती है तब अन्नरूप फल उत्पन्न होता है।

मानव शरीर पिण्ड में पुरूष ही अग्नि है, वाणी समिधा, प्राण धुंआ, जिह्वा ज्वाला, चक्षु अँगारे श्रोत्र चिन्गारियाँ। इस यज्ञ में अन्न की आहुति पड़ती है उससे रेतस रूप फल की प्राप्ति होती है।

छा उ 5/6-7

अग्निहोत्र का अहोरात्र के साथ, दर्शपौणमास का कृष्ण पक्ष एवं शुक्ल पक्ष के साथ चातुर्मास्य का तीन ऋतुओं के साथ सम्बन्ध। महाभारत शान्तिपर्व में इन तीनों यज्ञों को प्राचीन यज्ञ कहा गया है।

दर्शंच पौर्णमासं च अग्निहोत्रं च धीमतः।
चातुर्मास्यानि चौवासन् तेषु धर्मः सनातनः॥

वेदों का प्रादुर्भाव सृष्टि के प्रारम्भ (कृतयुग) में हुआ। यज्ञों की कल्पना कृतयुग और त्रेतायुग के सन्धिकाल में हुई। यज्ञों की कल्पना के समय आधिदैविक और आध्यात्मिक जगत की क्रियाओं तथा पदार्थों के वर्णन करने वाले वेदमन्त्रों का अभिप्राय समझाने के लिए उन मन्त्रों का सम्बन्ध यज्ञों की तत्तत् क्रियाओं के साथ किया गया। उस समय याज्ञिक क्रिया-कलापों में वे ही मन्त्र विनि-युक्त किए जाते थे जो आधिदैविक और आध्यात्मिक अर्थों के साथ-साथ याज्ञिक क्रियाओं का भी वर्णन करने में समर्थ थे। जैसे-जैसे यज्ञों की प्रधानता होती गई वैसे-वैसे उपरोक्त प्रक्रियानुसार मुख्यार्थ गौण होते गए और याज्ञिक प्रक्रियानुसार वेदार्थ की प्रधानता बढ़ती ही गई। सारे का सारा वेदार्थ याज्ञिक प्रक्रिया तक ही सीमित हो गया। प्रारम्भ में केवल एक ही अग्नि से यजुर्वेद के मन्त्रों में अग्निहोत्रादि यज्ञों का प्रचलन हुआ। तदन्तर महाराज पुरूरवा ऐल के काल से तीन अग्नियों और दो वेदों (यजुर्वेद एवं ऋग्वेद) के मन्त्रों से दर्शपौर्ण-मासादि, बाद में तीन वेदों के मन्त्रों (यजुर्वेद, ऋग्वेद सामवेद) पंचा-ग्निसाध्य ज्योतिष्ठोमादि यज्ञों की परिकल्पना हुई।

प्रत्येक कामना की सिद्धि के लिए यज्ञों की रचना हुई और उन समस्त यज्ञों की विविध क्रियाओं के अनुरूप वेदमन्त्र उपलब्ध न होने पर भी मन्त्रार्थ की उपेक्षा करके मन्त्रार्थ के विपरीत विनियोग का आरम्भ हुआ। इस प्रकार के अनेक मन्त्र ब्राह्मण आरण्यक एवं श्रौतसूत्रों में उपलब्ध है। काल्पनिक मन्त्रों की रचना का आरम्भ महाभारत से लगभग दो अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व हुआ था। प्रारम्भिक समय में तो वेद मन्त्रों को अपने-अपने कर्मों के अनुरूप बनाने के लिए साधारण परिवर्तन ही किया गया परन्तु बाद में वैदिक ग्रन्थों के प्रयुक्त विशेष शब्दों का प्रयोग किया गया जिससे वे वैदिक मन्त्रवत् ही प्रतीत हो। अन्त में यही मन्त्र कल्पना ''नमो भगवते वासुदेवाय'' सदृश साम्प्रदायिक तथा ''ओं ह्रीं हुं फट स्वाहा'' आदि अर्थ रहित तान्त्रिक मन्त्रों की रचना में परिणत हुई।

उत्तरकाल में पूरे मन्त्र को ही अनर्थक मानकर पदमात्र से ही विनियोग की कल्पना की गई। ''भद्रंकर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः ''वक्ष्यन्ति वेदागनीगन्तिकर्णम'' आदि मन्त्रों का कर्णवेध संस्कार में किया गया विनियोग इसी प्रकार का है। इन मन्त्रों में कोई भी पद ऐसा नहीं है जो कर्ण के वेध करने का वाचक हो। इसी प्रकार ''दधिक्रावणों अकारिषम'' का दधि भक्षण में। तत्पश्चात अक्षरमात्र के सादृश्य विनियोगों की कल्पना हुई। ''आ कृष्णेनरजसा'' रवि से, अग्नि-र्मूर्द्धा दिवः ककुत्पति'' मंगल से, ''उदबुध्यस्वाग्ने'' बुध से ''बृहस्पते अतियदर्यो'' बृहस्पति से ''शन्नोदेवीरभिष्टय'' शनि से ''कया'' नश्चित्र आ भुव'' राहु से, ''केतु कृण्वन्नकेतवे'' केतु के लिए मन्त्र प्रयुक्त हुए। परिणाम यह हुआ कि यजुर्वेद जैसे वेद के बहुत से मन्त्रों का याज्ञिक अर्थ ही प्रयुक्त किया गया। महीधर और उव्वट आदि भाष्यकारों ने तो अश्लीलता की हदें पार करते हुए याज्ञिक अर्थ किए जिन्हें पढ़कर सिर शर्म से झुक जाता है। परन्तु पौराणिक अब भी उन्हें मान्यता दे रहे है और इसके विपरीत महर्षि दयानन्द भाष्य में उन्हीं अश्लील मन्त्रों का सार्थक आधिदैविक एवं आध्यात्मिक परिपेक्ष में अर्थ बतलाकर आर्ष ऋषि परम्परा को गौरवान्वित किया परन्तु यह भाष्य उन्हें स्वीकार्य नहीं। महर्षि दयानन्द आर्ष परम्परा एवं निरूक्तकार यास्काचार्य के अनुरूप ही भोष्य के लिए अनुसरण करते है। यास्क के मतानुसार आधिदैविक अर्थ पुष्प स्थानीय है और आध्यात्मिक वेदार्थ फलस्थानीय। यज्ञ का प्रयोजन दैवत और अध्यात्मक का ज्ञान कराना है। ''याज्ञदैवते पुष्पफले देवता-ध्यात्मे वा'' (यास्क निरूक्त 1/11) सारांश यह कि अध्यात्म का ज्ञान कराना ही वेद का तथा उससे सम्बन्धित यज्ञ प्रक्रिया का मुख्य एवं अन्तिम प्रयोजन है। वेद का सम्पूर्ण ज्ञान है ही जीवन के निःश्रेयस और अभ्युदय के लिए। आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार वेद का प्रतिपाद्य विषय एक मात्र ब्रह्म है।

सर्वे वेदा यत पदमामनन्ति तपांसि च सर्वाणि यद्वदन्ति।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यचरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्यो-मित्येतत्॥
कठोपनिषद् 1/2/15

मनुष्य का लक्ष्य तो मोक्ष प्राप्ति का ही है। परन्तु मोक्ष केवल कर्म से ही नहीं और, न ही केवल ज्ञान प्राप्ति से प्राप्य है। वह तो प्राप्त होता है ज्ञान और कर्म के समुच्चय से। यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहा ही इसलिए है क्योंकि यज्ञ कर्म करने से मन की पवित्रता प्राप्त होती है और मन की पवित्रता से आत्मा की निर्मलता। आत्मा की निर्मलता से मोक्ष प्राप्ति। मुख्यतः जिस क्रिया में तीनों तत्त्व हों, अर्थात् देवपूजा संगतिकरण एवं दान वही यज्ञ कहलाता है। यज्ञ तो आज भी हो रहे हैं परन्तु इन तीनों तत्त्वों का अभाव है। छोटे बड़ों का सत्कार करना नहीं चाहते, शिष्य अध्यापकों का सम्मान नहीं करना चाहते, बच्चे माता-पिता का अर्थात् देवपूजा का अभाव। जो बड़ों के पास है वे देने को तैयार नहीं, भौतिकवाद में स्वार्थ का बोलबाला अर्थात् देवत्व गुण का अभाव। न देवपूजा न दान तो फिर संगतिकरण किसका किससे ? जब तक संगतिकरण नहीं न ही देवपूजा, न ही दान, तो फिर यज्ञ तो अधूरा ही रहा। यज्ञ ही नहीं, तो फिर श्रेष्ठतमं कर्म कहां ? यदि श्रेष्ठतमं कर्म ही नहीं तो फिर सुख कहां ? मन वचन व कर्म से सतत समर्पण ही यज्ञ है। आज भी यह मान्यता है कि यज्ञ में देवता स्वर्ग से आते है दान एवं हवि लेकर आशीर्वाद देकर वापिस चले जाते है। परन्तु महर्षि दयानन्द ने वेदमन्त्रों से प्रमाणित किया कि अग्नि इन्द्र वायु आदि नाम भिन्न देवताओं के नहीं अपितु एक ही परमेश्वर के गुणात्मक नाम है।

इन्द्रं मित्रं वरूणमग्निमाहुरथो दिव्यस्य सुपर्णो गुरूत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहु।।
ऋग् 1/164/46

(शेष पृष्ठि 7 पर)

पृष्ठ 2 का शेष-वैदिक राष्ट्र निर्माण....

लोगों का राष्ट्रहित ही एक उद्देश्य रहे। सब चिन्तन, मनन, आचरण आदि राष्ट्रहित के लिए ही हो। बुद्धिमान, त्यागी, तपस्वी लोगों के साथ बैठकर राष्ट्रहित के सब विषयों पर गहराई से विचार करो। कार्य-कारण का विचार करते हुए सद्विचारों को अमली जामा पहनाओ।

तुम सबका राष्ट्रहित में एक ही संकल्प हो। बाहरी रूप से ही नहीं तुम्हारे हृदय भी समान रूप से निश्छल, निष्पाप, शुद्ध, पवित्र रहें। तुम्हारा आपसी व्यवहार मित्रवत् हो। एक दूसरे के हित का चिन्तन करो। परोपकारी जीवन जीवो। राष्ट्रभक्ति तुम्हारे हृदय में कूट-कूट कर भरी हो, तो विदेशी आक्रान्ताओं का तुम्हारे ऊपर शासन का कभी अवकाश ही पैदा नहीं होगा।

राष्ट्र के पतन का एक प्रधान कारण आपस की फूट है। वेद की शिक्षा को भुला देने से आपस की फूट जन्म लेती है। महर्षि व्यास जी आपसी फूट के दुष्परिणामों पर प्रकाश डालते हुए महाभारत में लिखते हैं :

न वै भिन्ना जातु चरन्ति धर्मम्,
न वै सुखं प्राप्नुवन्ति इह भिन्ना।
न वै भिन्ना गौरवं प्राप्नुवन्ति,
न वै भिन्ना प्रशमं रोचयन्ति॥
न वे तेषां स्वदते पथ्यमुक्तम्,
योगक्षेमं कल्पते नैव तेषाम्।
तेषामर्थे न विद्यते किञ्चि-दन्यत्
विनाशात् ते सदैव विनाशं
प्राप्नुवन्ति॥

(महा० उद्योगपर्व 26.58)

अर्थात् अज्ञान के कारण एक देश की जनता जाति, बिरादरी के अनेकों रूपों में विभक्त हो जाती है। वे संगठन के महत्त्व को भूल जाते हैं। अपने कर्त्तव्य कर्मों का भी पालन नहीं करते। जब धर्मानुसार कर्त्तव्य कर्मों का पालन नहीं करेंगे तो फिर सुख कहाँ से आयेगा? सभी दु:खों के गड्ढे में गिर जाते हैं। ऐसी दु:खी जनता अपने राष्ट्रीय गौरव से भी हाथ धो बैठती है। उनके पारिवारिक और व्यक्ति-गत गौरव भी समाप्त हो जाते हैं। ऐसा दयनीय जीवन जीने वाले लोगों में संयम के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस प्रकार के स्वच्छन्द जीवन जीने वाले लोगों को अपने हित अहित की भी पहचान नहीं रहती। ऐसी स्थिति में वे अपने योगक्षेम की रक्षा नहीं कर सकते। ऐसे धर्मभ्रष्ट मिथ्याचारी लोगों के लिए विनाश के अलावा अन्य कुछ भी शेष नहीं रहता। इस प्रकार के लोग पराधीनता का जीवन जीने के लिए विवश हो जाते हैं तथा इनका राष्ट्र भी नरक के दु:ख सागर में डूब जाता है।

यदि हम अपने पुराने गौरव को पाना चाहते हैं तो देश के बुद्धिजीवी पुरुषों का कर्त्तव्य है कि सर्वप्रथम वेद की शिक्षा को प्राप्त कर ज्ञान सम्पन्न बनें। अपना एक मजबूत संगठन खड़ा करें। आपस में सत्य और प्रेम का व्यवहार हो। सत्यवादी लोगों का आपस में विश्वास बढ़ता है। विश्वास से संगठन में मजबूती आती है। संगठन में ही शक्ति होती है। इस कार्य के लिए आर्य समाज के साथ-साथ देश की अन्य धार्मिक व सामाजिक संगठनों में जागृति नहीं आई तो भयंकर विनाश का मुंह देखना पड़ेगा। फूट के घातक परिणामों से बचने के लिए ये आवश्यक है :

1. राष्ट्र की ब्रह्म शक्ति और क्षात्रशक्ति मिलकर राष्ट्र उत्कर्ष में प्रवृत्त हों।
2. हमारे ज्ञान और कर्म में साम्यता हो।
3. सब सत्य का आचरण करें।
4. आपस में प्रेम और विश्वास हो।
5. दूसरे के सद्भावों का सम्मान करना सीखें।
6. सहनशील बनें।
7. राष्ट्रहित के लिए अपने तन, मन, धन का सर्वस्व बलिदान करने को तत्पर रहें।
8. सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग के लिए सदा उद्यत रहें।
9. विद्या की वृद्धि और अविद्या के नाश के लिए प्रयत्नशील रहें।
10. दुष्ट, राष्ट्रद्रोही आतंकवादियों के विरोध में सब एकमत हों।

पृष्ठ 4 का शेष-जन्म-मरण के दु:खों....

से लाभान्वित होगा। हमारी दृष्टि में तो यह ज्ञान व विषय कक्षा प्रथम से स्नात्कोत्तर कक्षा तक अनिवार्य होना चाहिये। यदि हम इस ज्ञान से वंचित रहते हैं तो इसकी व्यक्तिगत हानि हमें तो होगी ही अपितु इससे देश व विश्व भी दुर्दशा को प्राप्त होगा व हो रहा है। आज का सारा विश्व अध्यात्म की उपेक्षा कर भौतिकवादी होकर अपने व अन्यों पर अन्याय व अत्याचार कर रहा है। कुछ व्यक्तियों के पास धन का अम्बार लगा है और कुछ को एक वा दो समय गेंहू की सूखी रोटी भी उपलब्ध नहीं है। युद्ध व युद्ध सामग्री पर देश व विश्व का बहुत बड़ा धन व्यय होता है, युद्ध होते रहते हैं व लाखों लोग अपने प्राणों से हाथ धोते हैं। इसका एक प्रमुख कारण यथार्थ ज्ञान व विवेक का न होना है। परहित व दान आदि की उच्च भावनायें प्राय: समाप्त हो गई लगती हैं। सर्वत्र स्वार्थ व इसकी पूर्ति के लिए लोग व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से लगे हुए हैं।

मनुष्य निर्मित विधि-विधान भी लोगों के निजी स्वार्थों के पोषण करते हैं तथा नैतिक मूल्यों के अनुरूप जीवन व्यतीत करने वाले पीडित व दु:खी रहते हैं। यह स्थिति भविष्य में किसी बड़े दु:ख का कारण प्रतीत होती है। अत: आज वैदिक-सत्य-यथार्थ व मनुष्य मात्र के एकमात्र वास्तविक धर्म के प्रचार व प्रसार की आवश्यकता सबसे अधिक है। जब तक वेदों को अपना उचित स्थान नहीं मिलेगा, इस संसार का कल्याण व पूर्ण हित होना असम्भव है। लोग मत-मतान्तरों में विभक्त रहकर एक दूसरे को दु:ख देते हुए स्वयं दु:खी रहेंगे और यह सिलसिला, शायद् इसी प्रकार से, चलता रहेगा। यथार्थ ज्ञान व इसके पोषक वैदिक धर्म के बिना मनुष्य को पूर्ण सुख व शान्ति कभी पास नहीं होगी। हमें यह भी अनुभव होता है कि वैदिक धर्म के अनुयायी जो प्रचार कर रहे हैं वह अपर्याप्त है जिसका प्रभाव नगण्य ही है। आज की परि-स्थितियों के अनुरूप वेदों के प्रचार की प्रभावशाली योजनायें बनाकर व अपने स्वार्थों को दूर रख कर संगठित रूप से वेदों का प्रचार करना होगा। ऐसा होने पर ही भारत की अध्यात्म व परा विद्या बच सकेगी। इसके विपरीत केवल एकांगी भौतिकवादी जीवन व्यतीत करने से परिणाम भयंकर हो सकता है जैसा कुछ अतीत के विश्व युद्धों से हुआ था। हम सभी मित्रों या पाठकों से सत्यार्थप्रकाश व वेदादि ग्रन्थों को अपने जीवन का एक अंग बनाने का आग्रह करते हैं। स्वाध्याय व साधना के इस कार्य को वह अपने आजीविका के कार्यों से समय निकालकर कर सकते हैं। इससे उन्हें व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों ही रूपों में लाभ होगा। हम यह भी स्पष्ट कर दें कि हम एक साधारण कोटि के साधक है परन्तु स्वाध्याय व चिन्तन-मनन से हमें यह विचार पाठकों तक पहुंचाने की प्रेरणा हुई। हम आशा करते हैं कि इससे पाठकों को लाभ हो सकता है। इति।

ऋषि बोधोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्य समाज सेवा संस्थान ट्रस्ट गाँव बहरावाद, जिला अलीगढ़ उत्तरप्रदेश की ओर से ऋषि बोधोतसव ग्राम प्रमुख श्री राम जी लाल की अध्यक्षता में मनाया गया। कन्या गुरूकुल दाधिया की स्नातिका कुमारी ज्योति तथा कुमारी माधवी तथा गुरूकुल कुरूक्षेत्र से श्री प्रमोद कुमार ने यज्ञ सम्पन्न कराया। मुख्य अतिथि के रूप में मुम्बई से पं. सोमदेव शास्त्री पधारे। मुख्य वक्ता पं. रामवीर सिंह एवं पं. खड़गसिंह ने ऋषि जीवन पर प्रकाश ड़ाला। गांव के ही श्री बाबू लाल एवं उमराव की भजन मंडली ने भजन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर आर्यवीरों एवं वीरांगनाओं , प्रमुख सभासदों, कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन तथा बाहर से पधारे महानुभावों का स्वागत किया गया। संस्था के प्रधान श्री कमल आर्य ने कार्यक्रम का संचालन किया। आर्य समाज निर्माण हेतू दान देने वाले श्री धर्मपाल, गांव के प्रधान श्री राजन सिंह एवं प्रमुख सहयोगी श्री संतोष कुमार को महर्षि दयानन्द का चित्र भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर दिल्ली से डा. देव सुमन, रूपेन्द्र विक्रम का भरपूर सहयोग मिला। रावतभाटा से लेक्चरार श्रीमती श्यामा आर्या ने साप्ताहिक यज्ञ के व्यय हेतु पांच सौ रूपये प्रतिमाह देने का निश्चय किया। अलीगढ़ एवं आसपास से पधारे महानुभावों के धन्यवाद के साथ ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न हुआ।

-नरोत्तम कुमार प्रचार

पृष्ठ 5 का शेष-यज्ञ परिकल्पना.....

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तद चन्द्रमाः।

तदेवशुक्रं तद ब्रह्म ताऽआपः स प्रजापति। यजु 32/1

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या यज्ञ से कामनाएं पूर्ण होती है? यदि होती है तो आर्य समाज के सिद्धान्तों और पौराणिकों में मतभेद क्यों ? पौराणिक भी तो यही कहते है कि अमुक देवी देवता की पूजा करो, जागरण कराओ, प्रसाद चढ़ाओ, अमुक नदी में स्नान करो, व्रत रखो, जल दूध तेल आदि से अभिषेक करो, फल की प्राप्ति होगी, कामनाएं पूर्ण होंगी। यही ईसाई करते है कि अपना दोष स्वीकार कर लो वह ईसा तुम्हें माफ कर देगा। यही मुसलमान कहते है कि अमुक कब्र पर जाकर सजदे करो इच्छाएं पूर्ण होगी, मन की मुराद पूरी होगी तो फिर महाभारत का कथन ''अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम'' ऐसे ही वचन चाणक्य के ''यथा धेनु सहस्रेषु वत्सो गच्छति मातरम्''।

तथा यच्चकृतं कर्म कर्त्तारम-नुगच्छति।। (चाणक्य नीति)

सत्य तो यह है कि हमारे किए हुए कर्मों का फल तो हमें भुगतना ही पड़ेगा। कामनाएं पूर्ण होती है अपने शुभ कर्मों के कारण। प्रश्न फिर वही कि यदि हमें कर्मानुसार ही फल मिलता है तो फिर स्तुति प्रार्थना उपासना किस लिए ? इस सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के सप्तम सुमल्लास में उत्तर देते है ''स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुणकर्म स्वभाव से अपने गुण कर्म स्वभाव सुधरना, प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहाय का मिलना ; उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षा-त्कार होना।

यज्ञ परमात्मा प्राप्ति का मुख्य साधन है। मानव हृदय में आत्म ज्योति प्रसुप्त रूप से विद्यमान है। इस यज्ञाग्नि को उद्‌बुध करना यज्ञ का उद्देश्य है। जहां यह वातावरण को शुद्धि प्रदान करता है वहीं शिव संकल्प, विचार, शुद्धि, सद्‌भाव, शान्ति मानसिक एवं बौद्धिक स्तर को उन्नत करता है। ''इदं न मम'' की भावना जागृत करना अरातिभाव का उन्मूलन, स्वार्थ व अहंकार का निराकरण, ''आत्मवत् सर्वभुतेषु'' की भावना, विश्वबन्धुत्व ''वसुधैव कुटु-म्बकम'' आदि का भाव जागृत करना ही यज्ञ का उद्देश्य है। यही है ''यज्ञो वै श्रेष्ठतंम कर्म'' का उद्‌घोष, उस का सार, उसी की सुरभि।

स्वामी दयानंद जन्म दिवस एवं ऋषिबोधोत्सव

आर्य समाज मंदिर, आर्य समाज चौक बठिंडा ने स्वामी दयानंद जन्म दिवस एवं ऋषिबोधोत्सव दिनांक 07-03-2016 को बड़े ही धूम-धाम से मनाया। हर वर्ष इस उत्सव को तीन दिन के लिए मनाया जाता रहा है, परन्तु इस बार बच्चों की वार्षिक परीक्षा चलने के कारण इस बार एक दिन का ही मनाया गया। इस शुभ अवसर पर श्री देसराज जिंदल मालिक पी. पी. इंडस्ट्रीज बठिंडा मुख्य अतिथि थे, उन्होंने अपने कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया, तदोपरांत पंडित अरविन्द कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न कराया गया।

वेद प्रचारक मुख्य वक्ता पूज्य स्वामी सूर्यदेव जी थे तथा अम्बाला से पधारे स्वामी करुणानन्द जी महाराज थे। मेरठ से आये भजनोपदेशक श्री भूपेंद्र कुमार आर्य के प्रवचनों एवं भजनों से सब लोग मन्त्र मुग्ध हो गए। आर्य समाज के संरक्षक श्री पी. डी. गोयल अधिवक्ता ने स्वामी दयानंद सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्री देसराज जी जिंदल (जो उनके परम मित्र हैं) का एक लाख रूपये दान देने पर धन्यवाद दिया। उसके बाद श्री गौरी शंकर ने उत्सव में दान देने वाले श्री शानू गोयल अधिवक्ता सपुत्र श्री पी. डी. गोयल अधिवक्ता 5100/- श्री अनिल अग्रवाल 3100/-, श्री देविन्दर गुप्ता 3100/- प्रो. श्री डी. आर. गुप्ता 3100/-, श्री अमृतलाल मित्तल 3100/-, श्री नवनीत कुमार 2500/-, श्री अश्वनी मोंगा 2100/-, श्री कुशल गोयल 2100/- तथा अन्य सभी दानी सज्जनों का धन्यवाद किया। ऋषिबोधोत्सव में सभी आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं ने पूर्णतया सहयोग किया। उत्सव में श्रीमती इंद्रा छाबड़ा, श्रीमती शांति जिंदल, श्री विपिन गर्ग, श्रीमती सुदेश बांसल, श्रीमती सुषमा मेहता, श्री रमेश गर्ग, श्री डी. पी. रल्हन, श्री सुरेश गोयल, श्री विवेक सारवाल, श्री भगवानदास छाबड़ा एवं और बहुत सदस्यों ने विशेष भूमिका निभाई। शहर के गणमान्य लोगों ने आकर उत्सव की शोभा बढ़ाई। शांति पाठ के बाद ऋषिलंगर का आयोजन किया गया। *-महामंत्री आर्य समाज बठिंडा*

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज, बरनाला में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्मोत्सव का आयोजन

4-3-2016 को श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज बरनाला में आर्य समाज के प्रवर्त्तक महामनीषी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव मनाया गया। हिन्दी प्रवक्ता मैडम डॉ० सुशील बाला एवं संस्कृत प्रवक्ता मैडम अंजना के नेतृत्व में महाविद्यालय के हिन्दी एवं संस्कृत विभाग ने संयुक्त रूप से इस कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें छात्राओं को महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा आधुनिक भारत-निर्माण में दिए गए योगदान से परिचित कराया गया। कार्यक्रम में विभिन्न छात्राओं द्वारा स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन एवं उनके द्वारा किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला गया। बी. ए. प्रथम वर्ष की छात्रा कुमारी शिखा ने महर्षि स्वामी दयानन्द के जीवन-परिचय पर पत्र-वाचन किया। बी. ए. प्रथम वर्ष की ही कुमारी रजनी रानी ने स्वामी जी की जन्मभूमि के संदर्भ में गुजरात के महत्त्व को रेखांकित करते हुए देश और समाज को महर्षि के अतुल्य योगदान का स्मरण दिलाया। बी. ए. द्वितीय वर्ष की कुमारी अनवीर कौर ने अपने भाषण में स्वामी दयानन्द के सामाजिक सुधार के क्रान्तिकारी कार्यों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। बी. ए. तृतीय वर्ष की, कुमारी गायत्री रानी ने भी स्वामी जी के सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में किए सुधारों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ० सुशील बाला एवं मैडम अंजना ने स्वामी दयानन्द पर विचार प्रकट करने वाली छात्राओं की प्रशंसा की तथा अन्य छात्राओं को भी इस प्रकार के ज्ञानवर्द्धक व समाजोपयोगी कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा नारी शिक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रयत्नों पर भी प्रकाश डाला।

-डा. सुशील बाला, बरनाला

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव

दयानन्द आदर्श विद्या पब्लिक स्कूल जीवन नगर लुधियाना की तरफ से महर्षि दयानन्द जन्मदिवस एवं बोधोत्सव धूमधाम और श्रद्धा के साथ मनाया गया। 3 मार्च को लुधियाना की समस्त आर्य समाजों की तरफ से विशाल शोभायात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा में स्कूल के 100 छात्रों ने भाग लिया। शोभा यात्रा में स्कूल बच्चों के साथ स्कूल का स्टाफ और स्कूल के प्रधान श्री मनोहर लाल आर्य और सदस्य श्री अशोक कुमार जी आर्य भी चल रहे थे। सारा स्टॉफ और बच्चे श्री दयानन्द जी की जय और आर्य समाज अमर रहे और सुन्दर-सुन्दर भजन गाते हुए जा रहे थे। सभी ने शोभायात्रा का बहुत आनन्द लिया।

5 मार्च को बोधोत्सव का कार्यक्रम स्कूल में रखा गया। सबसे पहले बच्चों ने पवित्र वेद मन्त्रों का पाठ किया। उसके बाद ऋषि दयानन्द के जीवन पर बहुत सुन्दर- सुन्दर भजन और विचार प्रस्तुत किए गए। उसके बाद प्रधान श्री मनोहर लाल आर्य ने महर्षि दयानन्द के जीवन और उनके द्वारा किए गए कार्यों पर अपने विचार प्रकट किए और कहा कि उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर ही जीवन सफल हो सकता है और आर्य समाज उन्नति कर सकता है। शिवरात्रि केवल व्रत रखने तक सीमित नहीं है। यह प्रतिज्ञा करने का दिन होता है। आप छात्र और छात्राएं भी प्रतिज्ञा करें कि माता-पिता की और गुरूओं की आज्ञा का पालन करेंगे। देश और समाज की सेवा करेंगे और नशों और बुराईयों से बचेंगे तभी आपका जीवन अच्छा बनेगा। इसके बाद श्री बलदेव जी आर्य ने कहा कि स्वामी जी सत्य के पुजारी थे और उन्होंने हमेशा सत्य को धारण किया। सत्य का सबको उपदेश किया। लाखों कष्ट आए फिर भी वेद धर्म और सत्य का प्रचार किया। आप भी सत्य को धारण करें। सत्य बात करें और सच बोले। अन्त में श्री मनोहर लाल आर्य जी ने सभी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर 3 मार्च से 7 मार्च तक स्कूल को लाईटों से सजाया गया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

-मनोहर लाल आर्य प्रधान स्कूल

वेदवाणी

थोड़ी-सी उपासना भी महान् फलदायक

कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते। तदिद्धचस्य वर्धनम्।।

–साम० पू० ३।१।४।२

ऋषि-मारीचः कश्यप।। देवता-विश्वेदेवाः।। छन्द-गायत्री।।

विनय-प्रभु की थोड़ी-सी भी भक्ति महान् फल देने वाली होती है। हम लोग समझा करते हैं कि थोड़े-से सन्ध्या-भजन से, एक-आध मन्त्र द्वारा उसका स्मरण कर लेने से हमारा क्या लाभ होगा, या एक दिन यह भजन छोड़ देने से हमारी क्या हानि होगी, परन्तु यह सत्य नहीं होगा ? हमारी उपासना चाहे कितनी स्वल्प और तुच्छ हो, परन्तु वह उपास्यदेव तो महान् है। ज्ञान और शक्ति में वह हमसे इतना महान् है कि हम कभी भी उसके योग्य उसकी पूरी भक्ति नहीं कर सकते और उसके सामने हम इतने तुच्छ हैं कि वह यदि चाहे तो अपने थोड़े-से दान से हमें क्षण में भरपूर कर सकता है। हम यदि थोड़ी देर के लिए भी उससे अपना सम्बन्ध जोड़ते हैं तो वह महान् देव उस थोड़े-से समय में ही हमें भर देता है। सन्त लोग अनुभव करते हैं कि प्रभु का क्षण-भर ध्यान करते ही प्रभु की आशीर्वाद-धारा उनके लिए खुल जाती है और वे उस क्षण-भर में ही प्रभु के आशीर्वाद से नहा जाते हैं : एक बार प्रभु का नामोच्चारण करते ही उन्हें ऐसा आवेश आता है कि शरीर रोमांचित हो जाते हैं और आत्मा आनन्दरस से पवित्र और प्रफुल्ल हो जाते हैं, परन्तु यदि हम साधारण लोगों की प्रार्थना-उपासना अभी उस महाप्रभु से इतना ऐश्वर्य नहीं पा सकती है, तब तो हमें उसके थोड़े-से भी भजन का नियमित सेवन करना चाहिए, एक भी दिन, एक भी समय नाग़ा न करना चाहिए। एक समय भी नाग़ा होने से जो सम्बन्ध विच्छिन्न हो जाता है, वह फिर जोड़ना पड़ता है। यही कारण है कि नाग़ा होने पर प्रायश्चित्त का विधान है। एवं, एक समय नाग़ा होने से एक समय की देरी ही नहीं होती, अपितु दुबारा सम्बन्ध जोड़ने जितनी देरी हो जाती है, अतः हम चाहे किसी दिन भजन में बिल्कुल दिल न लगा सकें, तथापि उस दिन भी कुछ-न-कुछ उपासना अवश्य करनी चाहिए, यत्न अवश्य करना चाहिए। पीछे पता लगता है कि एक दिन का भी यत्न व्यर्थ नहीं गया, एक-एक दिन की उपासना ने हमें बढ़ाया है-हमारे शरीर, मन और आत्मा को उन्नत किया है।

कम-से-कम यह तो असन्दिग्ध है कि संसार की अन्य बातों में हम जितना समय देते हैं, सांसारिक बातों की जितनी स्तुति-उपासना करते हैं और उससे जितना फल हमें मिलता है, उससे अनन्त गुणा फल हमें प्रभु की (अपेक्षया बहुत ही थोड़ी-सी) स्तुति-उपासना से मिल सकता है और मिल जाता है। कारण स्पष्ट है, क्योंकि वह महान् है, ज्ञान का भण्डार है, सर्वशक्तिमान् है और ये सांसारिक बातें अल्प हैं, तुच्छ हैं, निस्सार हैं, केवल ज्ञानशक्तिविहीन विकार है।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/-रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें।आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।